महादेवोहऽम् कामाख्या शक्ति दीक्षा

जगत की विसंगतियों के मध्य रह कर भी निरन्तर गरल पान करते हुये भी उस आनन्द की अनुभूति की जा सकती है। **भगवान शिव शीघ्र प्रसन्न होने वाले देव है, जहां शिव स्वरूप में भक्तों के समस्त पाप-ताप का निवारण करते हैं, वहीं मृत्युंजय स्वरूप में वे रोग निवारण, अकाल मृत्यु** भय **से मुक्ति दिलाकर साधक को दीर्घायु प्रदान करते हैं।** अज्ञान तप दूर कर ज्ञान की पूर्णता प्रदान करते है। **उमंग** एवं **आनन्द** का भाव पैदा करते है। साधक के दु:खों के कारणों को समाप्त सर्वथा सुखमय चेतनाओं से परिपूर्ण करते है। हमारा संसार तो ब्रह्माण्ड का छोटा सा भाग है, और मानव स्वयं उस ब्रह्माण्ड का ही एक अंश है, और उस मानव की विशेषता है कि वह छोटा सा अंश पूरे ब्रह्माण्ड को नाप सकता है, देख सकता है, समझ सकता है।

समाज व्यक्तियों से गठित होता है, समाज से व्यक्ति नहीं गठित होता और जो समाज के अनुरूप गठित होने पर विवश हो गया, वह साधना के क्षेत्र में कर भी क्या सकेगा? दीक्षा और साधना तो विपरीत क्रम में चलने की क्रिया है। न केवल सामाजिक मान्यताओं के विपरीत क्रम में वरन् जो दुख, दैन्य, अभाव, दारिद्रय, भाग्यहीनता व तनाव किन्हीं कारणवश स्वयं की भाग्यलिपी में अंकित हो गया हो, उसके भी विपरीत क्रम में चलने का। **दीक्षा** तो जीवन के नवनिर्माण की क्रिया ही होती है। जिसको साधक स्वयं साक्षात् कर सकता है।

जीवन की सफलता इसी में है कि हम सामान्य मनुष्य होकर भी उस ब्रह्माण्ड के रहस्यों को समझें, अन्य लोकों की यात्रा कर उसके रहस्यों को समझें, और यह सब कुछ संभव है, कुछ विशेष दीक्षाओं के माध्यम से ।अखिल ब्रह्माण्ड की सृजनकर्त्री होने के उपरांत भी देवी का मूलस्वरूप कौमार्ययुक्त ही माना गया है। केवल मानव व अन्य योनियों ही नहीं, प्रतिक्षण असंख्य ब्रह्माण्ड की उत्पति करने के उपरांत भी देवी को अक्षतयोनि कहा गया है, जो किसी आश्रय से सर्वथा मुक्त है वही शक्ति है और यही कारण है, कि एक देवी भक्त एवं साधक किसी अन्य आश्रय से सर्वथा मुक्त होते हैं, अपने आप में सम्पूर्ण होते है, क्योंकि सम्पूर्ण की आराधना का स्वाभाविक प्रतिफल एक सम्पूर्णता की प्राप्ति ही तो होगी। **तंत्र** के आदि रचयिता **भगवान शिव** है, और जो साधक शिव की **पूजा, अर्चना, साधना, रूद्राष्टाध्यायी** का पाठ पूर्ण विधि विधान से **श्रावण मास** में नित्य सम्पन्न करते है तो **शिव कामाख्या शक्ति** स्वरूप में साधक की सम्पूर्ण इच्छायें निश्चिंत रूप से सम्पन्न होती ही है।

उचित साधना पद्धति का चयन करके, अपने जीवन की **आवश्यकताओं** और **प्राथमिकताओं** का निर्णय करके उचित माध्यम तथा उपाय के द्वारा इसी युग को स्वर्ण युग बनाने की चेष्टा में रत हों। अपने जीवन के विविध **द्वन्द्व, वृथा, मोह, तनावों** को समाप्त कर आत्मरूपेण परिपूर्ण हो सकें।

महादेवोहऽम् कामाख्या शक्ति दीक्षा तो जीवन का **सौभाग्य** है जिसको प्राप्त कर साधक अपने जीवन को **आनन्दप्रद, ममत्व, स्नेह, धन, ऐश्वर्य, भोग, विलास, सौभाग्य** समस्त सिद्धियों से युक्त होकर **महादेवोहऽम्** और **कामाख्या शक्ति** से युक्त हो सकेगा और **शत्रु बाधा, अभाव, कष्ट, पीड़ा, तनाव, चिन्ताओं** से विर्निमुक्त हो जाता है और पूर्ण रूपेण **कामाख्या शक्ति** रूप में **पूर्ण शुद्ध, पवित्र** व **चेतन्य** स्वरूप में जीवन निर्माण की ओर अग्रसर होता है।

महादेवोहऽम् कामाख्या शक्ति दीक्षा न्यौ ₹ 1500/-

तीन पत्रिका सदस्य बनाने पर यह दीक्षा उपहार स्वरूप प्रदान की जायेगी।

इच्छुक दीक्षा प्राप्त करने वाले साधक का नाम एवं पता

नाम.....

.....

अपनी फोटो व तीन पत्रिका सदस्य का पूर्ण पता न्यौछावर राशि के साथ कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर भेजें।